



कार्य आधारित लैंगिक अंतराल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा कि भारत और चीन में महिलाओं की रोजगार दर में पुरुषों की तुलना में अधिक तेजी से गिरावट आई है।

परमुख बदि

- अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (International Labour Organisation- ILO) ने हाल ही में एक रिपोर्ट, 'अ क्वांटम लीप फॉर जेंडर इक्वलिटि: फॉर अ बेटर फ्यूचर ऑफ वर्क फॉर आल (A Quantum leap for gender equality: For a better future of work for all)' जारी किया।
- यह रिपोर्ट ILO की पहल "वूमन एट वर्क सेंटेनरी (Women at Work Centenary)" के पाँच साल के अवलोकन पर आधारित है।

इस रिपोर्ट के अनुसार

- एशिया-प्रशांत क्षेत्र की सबसे गतिशील अर्थव्यवस्थाओं, भारत और चीन, में बेहतर शिक्षा, जागरूकता के बावजूद महिलाओं की रोजगार दर पुरुषों की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से गिरती हुई देखी है।
- जनसांख्यिकी के अलावा कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का औद्योगिक अर्थव्यवस्था में तेजी से रूपांतरण एवं औद्योगिक क्षेत्रों में महिलाओं की दृष्टि से आधारभूत सुविधाओं का अभाव इसका एक मुख्य कारण है।
- प्रबंधन में शीर्ष पदों पर महिलाओं के नेतृत्व में कमोबेश वही स्थिति है जो 30 वर्ष पूर्व थी।
- विश्व स्तर पर अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में अधिक शिक्षित होने के बाद भी प्रबंधन के शीर्ष पर एक-तहई से भी कम महिलाएँ हैं।
- पाँच अलग-अलग देशों में लक्जिडइन की सहायता से 22% वैश्विक नयोजित जनसंख्या के वास्तविक समय में प्राप्त आँकड़ों के अध्ययन के पश्चात् यह सामने आया है कि रोजगार दर में गिरावट और महिलाओं को कम वेतन मिलने का मुख्य कारण शिक्षा नहीं है।
- साथ ही वर्तमान में डिजिटल कौशल युक्त महिलाओं की वजिज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणति (STEM) के क्षेत्र में उच्चतम भुगतान वाली नौकरियों में सबसे अधिक मांग है।
- हालाँकि रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि शीर्ष पर पहुँचने वाली महिलाएँ अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में कम-से-कम 1 वर्ष पहले पहुँचती हैं।
- भारत में रोजगार में लगी अंतराल की एक गंभीर तस्वीर को चित्रित करते हुए रिपोर्ट में कहा गया कि वर्तमान में केवल 86,362 महिला लक्जिडइन सदस्य भारत में नदिशक स्तर के पदों पर पहुँची हैं, जबकि पुरुषों की संख्या 407,316 है इसके अलावा, भारत में लक्जिडइन के केवल 23% सदस्य डिजिटल कौशल से युक्त थे।
- 2018 में भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं के रोजगार दर में 26 प्रतिशत की कमी थी। इसके अलावा 2005 और 2015 के बीच छह साल से कम उम्र के बच्चों और बनी छोटे बच्चों वाली वयस्क महिलाओं के रोजगार अनुपात में अंतर 38% तक बढ़ गया। इसे 'मातृत्व रोजगार जुर्माना' नाम से उल्लिखित किया गया है।
- कई कारक रोजगार की समानता में बाधक हैं, और सबसे बड़ी भूमिका इन क्षेत्रों में महिलाओं के अनुरूप आधारभूत सुविधाओं का न होना है।

नषिकर्ष

पछिले 20 वर्षों में महिलाओं ने अवैतनिक देखभाल और घरेलू कार्यों में जितना समय बताया है वह शायद ही आगे कम हो और पुरुषों के लिये दिन में कार्य की अवधि में सरिफ आठ मिनट की वृद्धि हुई है। परिवर्तन की इस गतिपर समानता हासिल करने में 200 साल से अधिक समय लगेगा।

स्रोत: लाइवमटि